① कठोपनिषद् के स्वरूप का वर्णन करें।

कठोपनिषद् का स्वरूप :—

कृष्ण यजुर्वेद की कठशाखा के अन्तर्गत आने के कारण इस उपनिषद् का नाम 'कठोपनिषद्' पड़ा। इसका दूसरा नाम 'नचिकेतोपाख्यान' अथवा 'नाचिकेतस उपाख्यान' भी है। उप + नि उपसर्गपूर्वक 'सद्' धातु से 'क्विप्' प्रत्यय करने पर 'उपनिषद्' शब्द का निर्माण होता है। 'सद्' धातु के तीन अर्थ लिए जाते हैं ① 'विशरण' अर्थात् नाश होना, ② 'गति' अर्थात् प्राप्त होना, तथा ③ 'अवसादन' अर्थात् शिथिल करना। इसके अतिरिक्त 'उप + नि + सद्' का अर्थ बैठना भी होता है। इसका भाव यही है कि गुरु की समीप शिष्य का शिक्षाग्रहणार्थ बैठना। अथवा 'ब्रह्म के समीप बैठना' अर्थ लिया जाता रहा होगा। इसका भाव यही हो सकता है कि ब्रह्म की प्राप्ति के जो साधन उपनिषदों में बतलाये गये हैं उन साधनों के अनुसार अपने जीवन का निर्माण कर उस परब्रह्म की प्राप्ति के निमित्त प्रयत्न करते थे तथा उसकी प्राप्ति भी कर लेते थे। 'सद्' धातु के तीनों अर्थों में से यहाँ 'प्राप्त होना' अर्थ ही लिया जाना अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है।

उप = ब्रह्म की समीपता, नि = निश्चय करके जिससे

IND CamScanner App

सद् = प्राप्त हो, उसका नाम उपनिषद् है।
इस प्रकार ब्रह्म प्राप्ति के साधनभूत ग्रन्थ का नाम भी 'उपनिषद्' हुआ। इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार की जा सकती है:- 'उप ब्रह्म सामीप्यं नि निश्चयेन सीदति प्राप्नोति यया सा उपनिषद्' अर्थात् जिसके द्वारा ब्रह्म की समीपता प्राप्त हो उसको 'उपनिषद्' कहते हैं। उपनिषद् विशेषरूप से आरण्यक ग्रन्थों के ही विशिष्ट अङ्ग हैं। आरण्यक ग्रन्थों का मुख्य विषय यज्ञ और यागों के भीतर विद्यमान आध्यात्मिक विषयों का विस्तार से वर्णन करना है।

कठोपनिषद् के अध्ययन से भी उपर्युक्त बात की ही पुष्टि होती है। इस उपनिषद् में भी अध्यात्म तत्त्व का गम्भीर विश्लेषण किया गया है। इसमें दो अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्लियाँ हैं। तैत्तिरीय आरण्यक में संकेतरूप में विद्यमान नचिकेता की उपदेशप्रद कथा से इसका प्रारम्भ होता है। नचिकेता के विशेष एवं बारंबार आग्रह करने पर यमाचार्य उसे अध्यात्म तत्त्व का उपदेश देते हैं।

त्रिविध तापों अथवा दुःखों से पूर्णरूप से छुटकारा प्राप्त कर लेना ही मानव जीवन का मुख्य उद्देश्य है। ये त्रिविध ताप हैं- (1) आध्यात्मिक ताप (2) आधिदैविक ताप

IND CamScanner App

और ③ आधिभौतिक ताप। इन तीनों ही प्रकार के दुःखों का जब अत्यन्त अभाव हो जाता है तब यही स्थिति अथवा अवस्था मुक्ति अथवा मोक्ष अथवा परमधाम आदि शब्दों द्वारा कही जाती है। सांख्य तथा न्यायदर्शनकारों ने इसी बात का विश्लेषण निम्नलिखित सूत्रों द्वारा किया है—

"अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः"

सांख्यसूत्र अध्याय 1। सूत्र। 1 ।।

अर्थात् आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक— इन तीनों प्रकार के दुःखों से छुटकारा प्राप्त कर लेने का नाम ही अत्यन्त पुरुषार्थ अथवा मोक्ष है।

"तदत्यन्त विमोक्षोऽपवर्गः"

न्यायदर्शन 1/1/22 ।।

उन दुःखों का अत्यन्त उच्छेद अथवा अभाव हो जाना ही अपवर्ग अथवा मोक्ष कहलाता है।

कठोपनिषद् में यमाचार्य ने नचिकेता की अनेक प्रकार से परीक्षा ली और जब इस परिणाम पर पहुँच गये कि नचिकेता वास्तव में आत्मज्ञान की प्राप्ति का अधिकारी है तभी यमाचार्य ने नचिकेता को आत्मज्ञान सम्बन्धी उपदेश दिया है। कठोपनिषद् के निम्न वाक्य द्वारा इस भावना को स्पष्ट किया गया है—

स त्वं प्रियान्प्रियरूपांश्च कामानभिध्यायन्नचिकेतोऽत्यस्राक्षीः।
नैतां सृङ्कां वित्तमयीमवाप्तो, यस्यां मज्जन्ति बहवो मनुष्याः ।।

कठो० 1/2/3 ।।

IND CamScanner App

विद्याभीप्सिनं नचिकेतसं मन्ये न त्वा कामा बहवोऽलोलुपन्त ।। कठो० 1|2|4 ।।

उस आत्मतत्त्व के साक्षात्कार का प्रधान साधन योग ही है। पतञ्जलि मुनि के सिद्धान्तानुसार 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' अर्थात् अपने चित्त की वृत्तियों का निरोध कर लेना ही योग है। योग के इस सिद्धान्त के अनुसार जब मनुष्य चित्त की एकाग्रता प्राप्त कर लेता है तब वह आत्म-चिन्तन करने का अधिकारी बन जाता है। ऐसा करने पर मनुष्य की प्रायः सम्पूर्ण सांसारिक अभिलाषाएँ शान्त हो जाती हैं और वह आत्म-ज्ञान की उपलब्धि से अपने अज्ञान अथवा मायारूपी बन्धन को छिन्न-भिन्न कर अपने वास्तविक आत्मस्वरूप के दर्शन के निमित्त प्रयत्नशील हो जाता है। एक समय आता है कि जब वह आत्मतत्त्व का साक्षात्कार कर अपने वास्तविक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर लेता है। ऐसी दशा में उसकी अपने शरीर के प्रति भी कोई किसी प्रकार की आकांक्षा अवशिष्ट नहीं रह जाती और वह अपने आपको इस मायाजन्य संसार से पृथक् देखता है। इसी को शास्त्रकारों ने जीव-मुक्तावस्था नाम से अभिप्रेत किया है।

जब मनुष्य को जीवन्मुक्तावस्था प्राप्त हो जाती है तब वह जीवन्मुक्त कहलाता

IND CamScanner App

है। उसके बाद इस शरीर का त्याग हो जाने पर वह पर ब्रह्म परमात्मा के उस आनन्द की अनुभूति पूर्णरूप से करने लगता है। इस तरह वह सत्-चित्- आनन्दस्वरूप होकर उस मोक्ष के आनन्द में लीन रहता है। इस प्रकार उसकी यह आनन्द की उपलब्धि कर्मजन्य है और उन कर्मों के फल की अनुभूति के एक निश्चित समय के बाद वह पुनः इस लोक में जन्म प्राप्त करता है।

इस प्रकार इस कठोपनिषद् में उस आत्म साक्षात्कार के साधनों का विशेष रूप से वर्णन करते हुए उस अद्वितीय ब्रह्म का वर्णन अत्यन्त सूक्ष्मता के साथ किया गया है। इति।

डॉ० ओम प्रकाश आर्य
असिस्टेण्ट प्रोफेसर (संस्कृत)
महाराजा कॉलेज, आरा।

IND CamScanner App